बादलों का पृथ्वी से वही रिश्ता है जो चंद्र का चंद्रिका से। यानी एक-दूसरे के अन्योन्याश्रित। बादल नहीं तो वर्षा नहीं और वर्षा नहीं तो पृथ्वी की उर्वरता नहीं, प्रकृति की सर्जना नहीं, श्रृंगार नहीं और सरसता नहीं। बिना सरसता के कैसा सावन ?

पहले सावन आता था तो प्रकृति उसका स्वागत करने के लिए मनभावन श्रृंगार से सज्जित हो उठती थी। काले-कजरारे बादल उमड़-घुमड़ कर जीवन-रस की वर्षा करते और हरित-वसना प्रकृति नटी उस रसरूपी जीवनी शक्ति का पान कर नर्तन करने लगती। पेड़ों की डाल पर डले झूलों पर युवतियां लोकगीतों के साथ कल्पनाओं की पेंग भरतीं, हरियाले उत्सवों में रमणियां रमण करतीं, आकाश में इन्द्रधनुष की सतरंगी आभा और वर्षा उपरांत संध्या-सुंदरी के श्यामल आंचल में कंदुक सा छिपा प्रतीची का सूर्य बादलों में सिंदूरी रंग बिखेरता अठखेलियां करता अस्ताचल में अन्तर्धान हो जाता।

वस्तुतः बादल वहीं रीझते हैं जहां वन होते हैं। किन्तु मानव द्वारा किये गये वन विनाश को देखकर अब वे रीझते नहीं बल्कि खीझते हैं। घनघोर घटाएं, कई दिनों तक चलने वाली रिमझिम वर्षा अब स्मृतियां भर रह गई हैं। अब बादल आते नहीं, आते हैं तो अंधड़ पर सवार होकर आते हैं और बिन बरसे जल्दी ही सरक जाते हैं। फलतः सावन भी जेठ सा तपता सूखा निकल जाता है। सावन आता भी है तो अनजाना सा और उमंग के अभाव में उपेक्षित सा चला जाता है।

हमारे यहां जल की एक संस्कृति रही है। जल को देवता के रूप में पूजा गया और उसके शुद्ध स्वरूप को कायम रखते हुए उसका संरक्षण किया तथा मितव्ययता के साथ उसका उपभोग किया। पारम्परिक जल स्थापत्य से वर्षा जल का संग्रहण किया और इसके चलते विकट अकाल को भी सहर्ष झेल लिया। किन्तु सुख, सुविधा और संग्रह वृत्ति तथा स्वार्थ लिप्सा के चलते आज हमने न केवल जल का अंधाधुंध दोहन किया, उसे प्रदूषित किया बल्कि जल आवक क्षेत्रों पर अतिक्रमण कर बांधों और नदी-नालों का गला घोंट दिया। फलतः बांध सूख गये, पहाड़ कट गये, वन घट गये, तालाबों की तलहटी धूल चाटने लगी और बावड़ियां कचरापात्र बन गईं। परिणाम स्वरूप जलवायु परिवर्तन हो गया तथा पेयजल संकट उत्पन्न हो गया। इस वर्ष ग्रीष्म ने अपना जो रौद्र रूप दिखाया है उसकी तपिस तो अभी तक समाप्त नहीं हुई है।

सावन अपनी सरसता को छोड़ कर जेठ न बन जाये, प्यासी धरती की तरह हमारे कंठ प्यासे न रहें, इसके लिए हमें आज से ही जतन करना होगा। तो फिर आइए! आज से ही हम पारम्परिक जल स्रोतों को पुनर्जीवित कर उनका संरक्षण करें, केवल उपभोग की मानसिकता से निकल कर जल का विवेक के साथ उपयोग करें, व्यर्थ बह रहे वर्षा जल को भू-गर्भ में लौटाने का जतन करें और अधिक से अधिक पेड़ लगाकर उनका पालन करें। पेड़ हमें प्राणवायु भी देंगे और बादलों को रिझाकर वर्षा को आमंत्रित भी करेंगे।

देवेन्द्र शर्मा